ज्ञान

रूहानी वाप वैठ रूहानी वच्चों को समझाते है, क्यों कि वाप नें यह समझाया है कि आत्मा ही यह ज्ञान धारन करती है। इसलिये निराकार परमपिता परमात्मा ही ज्ञान का सागर कहते हैं। इस परमआत्मा सुप्रीमसोल में ही वो सारा ज्ञान है। संस्कार आत्मा में होते हैं नां कि शरीर में। आत्मा की पार्ट वजानें लिये शरीर धारनधारन करती है। आत्मा कहती है मैं शरीर धारन करती हूँ। कव राजा कव रंक वनता हूँ। अभी तुम वच्चों को यह निश्चय हुआ है कि राजाई देनें वाला वाप ही है। और गदाई देनें वाला है रावण। तुम जो वाप द्वारा सुनते हो वो दूसरा कोई नही सुनते हैं। तुमको ही यह ख्याल में रहता है कि किसको हमको आत्म अभिमानी वनना है। दुनिया में कोई की साधु सन्त रिषी मुनी आद की ~~[illegible]~~ नही कि देहीअभिमानी किसको कहा जाता है। यह भी गायन है हीरे जैसे जन्म अमोलक...अव हीरे जैसे जन्म तो सव कहेंगें इन लक्ष्मी नारायण का ही है। इनको भी इतना ऊंचा जन्म कोई नें तो दिया होगा नां। कोई नें ही ऐसा समझदार वनाया होगा नां, जैसे प्राईमिनस्टर इन्द्रा गांधी है, तो उनको भी इस ऊंचे दर्जे पर किसनें लाया? कहेंगें वाप नें उनको अपनें समान प्राईमिनसटर वनाया है। खुद भी था फिर वच्ची को भी वनाया है। तो इन लक्ष्मी नारायण को ऐसा किसनें वनाया है यह कोई भी नही जानते है। तुम्हारे में भी नम्बरवार समझते है। नही तो ऐसे वाप को सव वहुत ही प्यार से याद करें। वाप जिनको सारी दुनिया याद करती है है जो सारी आत्माओं ~~दुनिया~~ का वाप है जिनको सारी दुनिया याद करती है। वो हमको ऐसा वनाते है। अगर वाप की मत पर चलते रहेंगें तो हीरे जैसा वनेंगें। हीरे को रखनें की डिव्वी देखो कैसी चीज है। हीरे को वहुत सम्भाल से डिव्वी के अन्दर रखा जाता है। शिव वावा की यह डिव्वी देखो कैसी है। यह तो वहुत ही ऐक्सपेन्सिव है। यह ही ऐसी चीज है जिनको सारी दुनिया याद करती है। वहुत जो महगी चीज होती है उनको ही याद किया जाता है। वाप वहुत मेंहगी चीज है। महंगी चीज वहुत मुश्किल मिलती है। और जो वहुत शाहुकार होते है वो ही वहुत महंगी चीज लेते है। यह तो कितनी ऊंच ते ऊंची चीज है। मगर मिलती है गरीवों को। क्यों कि गरीव निवाज है। वच्चे ही जान सकते हैं। शिव वावा है सभी आत्माओं के वाप। आत्मा तो अविनाशी है। यह भी कोई की वुधी में नही आता इतनी सारी आत्माओं का वो निराकार वाप है। वो है शिव। वाकी है सव सालीग्राम। वाप ही वैठ कर अपना परिचय देते है। ऐसा परिचय सारी दुनियां में कोई के पास भी नही है। दुनियां में वहुत मनुष्य है जो वनारस में जाकर काशीवास करते है क्यों कि वो समझते है शिव पास जानें से हम मुक्ति में जावेंगें। वहां वहुत साधू सन्त आद जाकर वैठते है। उनकी डिपार्टमेन्ट ही अलग होती है। समझते है शिव के पास वैठनें से हम मुक्ति में जावेंगें। अव ऐसे तो हो नही सकता। पतित पावन, मुक्ति जीवन मुक्ति दाता, को ही तो वुलाते है। तो जरूर उनको आना पड़े। परन्तु वहां तो वो है इनकी प्रतिमा। खुद तो नही है नां। मुक्ति तो खुद (शिव वावा) देंगें नां। प्रतिमा कैसे देगी? कृष्ण तो राज्य करते थे। अव वो कहां है? अभी तो जड़ चित्र है। वो राजाई थोड़ेई है। राजाई होती तो खुद भी होते। तुम अभी पुरूषार्थ कर रहे हो कृष्ण पुरी में चलनें। कृष्ण वंहा राज्य करेंगें। राज्य करते थे। फिर पुनर्जन्म लेते आये है। जो राज्य करते थे वाद में फिर उनके जड़ चित्र वना कर उनकी भक्ति पूजा करते है। कहेंगें इस नालेज से यह मनुष्य से देवता वनें। अदापत ही सारी वदल जाती है। जिस अदापत से आत्मा पढ़ती है उससें फिर जो रिजल्ट मिलती है

************ *************************** ****** ******

तो सारी अदावत ही वदल जाती है। तुम मनुष्य से देवता वन जाते हो। दूसरा शरीर लेकर प्रालब्ध भोगते हो। मृत्यु लोक में है पुरूषार्थ। अमरलोक में है प्रारब्ध। यह तो सिवाय इस संगम युग के कहीं हो नही सकती। एक जन्म में पुरूषार्थ, दूसरे जन्म में उसकी प्रारब्ध मिलती है। यह सव संगम पर ही हो सकता है। यह पुरूषार्थ भी संगम युग पुरूषोत्तम आयुग कराते है। यह है पुरूषोत्तम युग। वाप आकर इस शरीर दवारा पढ़ाते है। जव आत्मा शुद्ध हो जाती है तो फिर अमरलोक में जाते है। वहां आत्मा और शरीर दोनों ही

ही सुख होते है। यह संगम युग ही नामी ग्रामी है। यह है आसरफिशियस युग। यह भी ऊँचे समझते है और जो भी युग है उनमें गिरती कला ही होती है। उनको आसरफिसियस नही कहेंगे। क्यूं कि कलायें कम होती जाती है। चढ़ती कला तुम्हारी अभी इस संगम पर ही होती है। यह सब धारन करना है। और बाप को याद करना है। सारी शिक्षा का मूल तन्त है बाप को याद करना। कोई-2 तुमसे प्रश्न पूछते है :-बोलो यह कुछ भी मत पूछो। पहले एक ही बात को समझो। बापकहते है मुझे याद करने से तुम पावन बनोगे। पहले-2 यह याद का वसीकरण मन्त्र है। गुरू जबकरते है तो मन्त्र मिलता है ना। अब गुरू तो वो है जो साथ ले जावे। सदगती देवें। गुरू के पास सदगती की चाहना से ही जाते है। यह बाप टीचर सतगुरू है, सब आत्माओं को ले जाते है। सबका बाप भी है। सबका सदगती दाता भी है। कितनाउंचा टीचर होगा। यह भी तुम समझा सकते हो कि वो सब का बाप टीचर सतगुरू है। वो ही सृष्टी की आद मध्य अन्त का नालेज देते है। दुनियां में यह नालेज कोई में नही है। ना रचता को ना रचना की आद मध्य अन्त को जानते है। नेती-2 कह देते है। खुद जो विश्व के मालिक थे जिन्होंने 84जन्म लिये है वो भी कहते है कि हम नही जानते है। अभी बाप यह नालेज दे रहे है। फिर तुम यह भूल जाओगे। इन लक्ष्मी नारायण को भी इन रचना की आद मध्य अन्त का ज्ञान नही है। वो तो प्रारब्ध है ना। इस भी ड्रामा के राज़ को तुम्हारे सिवाय और कोई जान नही सकते है। तुम बच्चों को बाप नालेज दे रहे है। तुम समझते हो हम जितना बाप को याद करेंगे हमारे विकर्म विनाश होंगे। और सतोप्रधान दुनियां के मालिक बनेंगे। अभी है तमोप्रधान दुनियां के मालिक। तमोप्रधान में करोड़ो मनुष्य है। सतोप्रधान में बहुत थोड़े होंगे। सीढ़ी में क्लीयर लगा हुआ है। इतनी सहज बात भी कदर बुधी समझते नही है। बिलकुल ही जनावर बुधी है। इनको कहा ही जाता है काटों का जंगल। है तो मनुष्य। परन्तु करतूत जनावरों जैसीहै। एक दो को गाली बकते रहते है - उल्लु का बच्चा। यह तो मक्खा हाथी है। ओह:- यूं डेवल। तो यह गाली हुई ना। शैतान भी कहते है। तुम जानते हो अभी अब शैतानों का राज्य है। सतयुग में ऐसे अक्षर कब नही कहते। यह बातें अभी तुम बाप द्वारा सुन कर और धारन करते हो। दूसरा कोई सुनता ही नही। यह है काटों का जंगल। उनको कहेंगे फूलों का बगीचा। मुसलमान भी कहते है गार्डन आफ अल्लाह। इसको दोज़ख कहते है। यह है शैतानों का जंगल दोज़ख। गाड जो स्थापन करते है उनको स्वर्ग कहा जाता है।वहां एक धर्म था बाकी यह धर्म बाद में आते है। पहले कोई नही था। यह भी और किसीकी बुधी में नही है।ढेर की ढेर आत्मायें है। अब आत्मायें सब भाई-2 ठहरी। एक परमात्मा के बच्चे हुये। अच्छा वो तो हो गये निराकार।आत्माओं का बाप। फिर मनुष्य सृष्टी में जो भाई-बहन बने, है,उनका बाप कौन? तो वो है प्रजापिता ब्रह्मा। अच्छा प्रजापिता ब्रह्मा है तो फिर मम्मी कौन? यह बहुत गुह्य बातें है समझाने की। जगतअम्बा का नाम तो है। उनको सरस्वती भी कहते है। बहुत नाम रख दिये है। सरस्वती भी तो बेटी है। माता तो नही है। सरस्वती वो जगदम्बा के बहुत चित्र है, किस्म-2 के। वास्तव में माता तो एक होनी चाहिये ना। एक के अनेक नाम थोड़ेई होते है। मनुष्य ही मूंझ जावें। और फिर 8, 10 भुजायें दे देते है।अच्छा भला काली उसे आवेगी कैसे बनी? यह सब क्या है? माता फिर माता होनी चाहिये। प्रजापिता ब्रह्मा एक ही है ना। माता भी एक होनी चाहिये।यह सब बातें ना जानने कारण ढेर बना दी है। सरस्वती तो बेटी है। तुम भी सब बच्चियां सरस्वती भी बच्ची2 बाबा-2 कहती थी ना।कभी पति को बाबा थोड़ेई कहेगी। तो यह सब कितनी गुह्य बातें है। इनको समझने की भी बहुत बड़ी युक्ती चाहिये। नये किसीको यह बातें सुनाते है तो मूंझ पड़ते है। पहले-2 तो बाप का परिचय दो।फिर दूसरी बातें। प्रश्न तो ढेर पूछेंगे। बोलो पहले-2 बाप को तो समझो तो पीछे यह सब समझ जावेंगे। और बातों को छोड़ दो। बाप कहते है मुझे जानने से तुम सब कुछ जान जावेंगे। कहते है भारत में क्यूं आते है?यह ऐसे क्यूं दिखलाया है? अरे:- तुम पहले बाप को

...ता जानो। बाप को जानने से तुम सब कुछ जान जावेंगे। बाप जो पतित पावन है उनसे योग लगाने जगाने से ही तुम पावन बनेंगे। पहले पावन बनने की शिक्षा लो। आत्मा जो अपवित्र बन गई है वो पवित्र कैसे बने पहले वो तो शिक्षा लो। पुकारते भी इसीलिये है ना हे पतित पावन... जरूर पतित दुनियाँ मे दुःख है। तो पहले पावन बनने की बात तो समझो। एक बाप को याद करो। बस दूसरी बात फिर समझो यो ना समझो। मूल बात है बाप से बुधी योग लगाओ।तुम पावन बनना चाहते हो तो बाप को याद करो। और बातों को छोड़ दो। डिबेट को तो बन्द कर देना चाहिये। फालतु टाईम वेस्ट जाता है। बोलो और सब बातों को छोड़ कर एक बाप को याद करो। तुम पावन तो बनना चाहते हो ना। पहले-2 उनके कल्याण की बात उनकी बुधी में देनी चाहिये।पतित से पावन बाप की याद से बनेंगे। इसलिये एक मुख्य त्रिमूर्ती वाही चित्र, काम में आता है। फिर है 84जन्मों की डिटेल।गीता में भी आद और अन्त में मनमनाभव का अक्षर है। अब तो बाप प्रेक्टीकल में समझाते है कि यह शास्त्र है सबभक्ति मार्गके। इनमें कोई सार नही है। बाप कहते है सारे है मुझे याद करने में।मनुष्य बहुत बातों में मुँझ कर चले जाते है।उनको पहले-2 बाप का परिचय देना है। पावन बनना चाहते हो? तो इन रावण पर जीत पहनों। दिखाते है बन्दरों की सेना ली। वास्तव में बात अभी की है।सैना में थोड़े होते है। सारा शहर थोड़ेई सैना बन सकते है। छोटे-2 बच्चों आद को थोड़ेई सैना में ले आवेंगे। तुम अभी रावण पर जीत पाते हो। छोटे-2 बच्चों को भी शिक्षा दे सकते हो। कि शिव बाबा को याद करो। रावण पर जीत तो हर एक को पानी ही है। यहाँ सब इनडिपेन्डेन्ट है। ऐसे नही समझो कि हम मयी बाबा के लिये लड़ते है,नही। अपने ही लिये यह मेहनत करते हो। हम यह बनने वाले है। अपनी उन्नती की लिये यह मेहनत करनी है। आत्मा जो तमोप्रधान बनी है उनको ही फिर सतोप्रधान बनाना है। यह किसीको पता नही है। अभी है तमोप्रधान दुनियाँ का अन्त। बाप अन्त में ही आंदर सैवदी सदगती करते है। सबको सतोप्रधान बनाते है। तो शिव बाबा को याद करना चाहिये ना। योगी बनना चाहिये। जो शिव बाबा को याद नही करते है उनको भोगी कहा जाता है। एक बाप से ही योग लगाना है। सन्यासी योग लगाते है ब्रह्म से।उनको बाप का परिचय ही नही है। बाप से योग लगाते ही नही।बाप खुद अपना परिचय बैठ देते है।मैं बिन्दी हूँ। मैं ज्ञान का सागर हूँ। वो तो समझते है हजारों तत्वों से तेजोमय ब्रह्मतत्व है। किसीको भी पता नही है। बाप आकर अपनी ही पहचान देते है। अपनी पहचान देकर अपना बनाते है। अभी तुम बच्चें जानते हो हम स्वदर्शन चक्रधारी बन रहे है। बाप हमको सृष्टी की आद मध्य अन्त का ज्ञान सुनाते है। पतित से पावन होने लिये योग सिखाते है। एवर हेल्दी और एवर वेल्दी बनाते है। मनुष्य ही बनेंगे ना। इन लक्ष्मी नारायण को हेल्थ और वेल्थ सब था। आयु भी बड़ी थी। हाँ कब अकाले मृत्यु नही होती थी। यह कोई को भी पता नही है कि यह काल पर जीत पहनाने वाले है। वो है ही अमरलोक। मरने का वहां नाम नही।यहाँ यह मृत्यु लोक है तो मरने का नाम भी है। एक-2 बात बहुत समझाने की है। यह बुधी को तरावट देनी जैसी है। बाप अनेक प्रकार की युक्तियां बताते है।यह ऐ ही बाप टीचर सतगुरू है। मनुष्य कोकब सदगती दाता नही कहा जा सकता। बाप कहते है मैं ही तुमको पावन बना कर सदगती में ले जाता हूँ। फिर तुमको दुर्गती में कौन ले आते है? यह रावण। अभी रावण राज्य है। सन्यासियों को भी तुम सिद्ध कर बता सकते हो। सबमें पांच विकार तो है ना। तुम भी जरूर विकार से ही पैदा होते हो। यह है ही रावण राज्य। बात करने की बहुत हिम्मत चाहिये। तुम कभी भी माथा नही टेकेंगे। तुम थोड़ी भी अरगु करेंगे तो मनुष्य झट समझ जावेंगे यह ब्रह्मा कुमार कुमारियां है। समझाने की बहुत युक्तियां चाहिये। मूल बात फिर भी बाप को याद करके सतोप्रधान बनने की है। यह भूलनी नही चाहिये ।और